राष्ट्रीय सेवा भारती

www.rashtriyasewabharati.org | वर्ष 2024, कृष्ण पक्ष (माघ) विक्रम संवत - 2080, फरवरी

सबके राम - सबमें राम

वंचित के हितकारी

"ऐसे हैं मेरे राम"

श्री राम गुरुकुल में पढ़ते थे। उनके साथ श्रृंगेरपुर के रहने वाले श्री गुह निषाद भी गुरुकुल में स्नातक हुए। स्नातक होने के पश्चात राम अयोध्या वापस जाने वाले थे, तो उनके परम मित्र गुह जो सदैव राम के साथ ही रहते थे, खाते-पीते, खेलते-पढ़ते थे। राम से दूर होने की बात पर गुह निषाद को बड़ा कष्ट होने लगा। वह दु:खी होकर सोचने लगे कि हम गुरुकुल में साथ रहते थे, पर जब राम अयोध्या चले जाएंगे, युवराज बन जायेंगे, तब मैं उनके पास भी नहीं जा सकूंगा, वो युवराज हो जायेंगे तो उनको छू भी नहीं सकूंगा। गुरुकुल में तो मैं उनको आलिंगन में भर लेता था, पर अब ऐसा नहीं होगा। (आगे क्रमश.)

"अयोध्या में श्री रामलला के साथ भारत का स्व लौट कर आया है"

- प.पू. डॉ. मोहनराव भगवत -
सरसंघचालक, रा. स्व. सं.

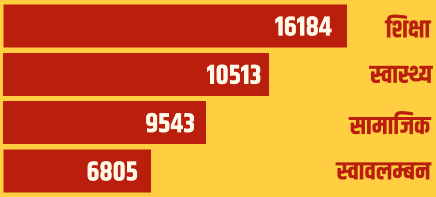

सेवा कार्यवृत्त

"नर सेवा नारायण सेवा का मूल ध्येय लेकर समाज में वंचित, अभावग्रस्त, उपेक्षित एवं पीड़ित लोगों के सर्वांगीण विकास हेतु राष्ट्रीय सेवा भारती सतत कार्यरत है। यह नगरीय -झुग्गी झोपड़ी एवं पुनर्वास बस्तियों में समाज कल्याण कार्यक्रम जैसे नि:शुल्क चिकित्सा, नि:शुल्क शिक्षा, कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से भी कार्यरत है। देशभर के 903 जिलों में सेवा भारती द्वारा 43045 सेवा कार्य चलाए जा रहे हैं।"

(पेज 1 से निरंतर) ...कल्पना कीजिए वह गुरुकुल जहां छोटे से छोटे समाज का व्यक्ति पढ़ता था और राजा का पुत्र भी साथ में पढ़ता था। जहां कोई स्थिति, कोई वैभव, प्रेम के मध्य दीवार नहीं थी। सबको समानता थी। सब समान थे। गुरु की शरण में सब मिलकर श्रम करते थे। और गुरुदेव से विद्या अर्जित करते थे। ऐसे गुरुकुल से निषाद गुह और राम स्नातक हुए। गुरुकूल से अयोध्या वापस जाने पर । गुह ने कहा **"श्री राम अब आप अयोध्या जाएंगे, वहां के राजा बन जाओगे, मैं आपसे वंचित हो जाऊंगा, दूर-दूर से ही आपको निहारूंगा"।** यह सब सुन कर प्रभु श्री राम ने उसी समय चित्त में संकल्प किया। वह अयोध्या लौटे पर उनका मुंह, घर सबसे मिलने की ख़ुशी से खिला हुआ नहीं था। पिता ने पूछा **"राम आप अनमने क्यों हैं? आपके श्री मुख से श्री कहां गई?"** तो श्री राम ने कहा **"पिताश्री मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, मुझे आप युवराज पद पर अभिषिक्त करें उससे पहले मैं अपने मित्र गुह को श्रंगेरपुर का राजा बना देखना चाहता हूं। क्या आप मेरी यह इच्छा पूरी करेंगे"**? पिता ने हर्ष से भर कर कहा **"मेरा राम जो चाहेगा वही होगा'।** यह है मेरे प्रभु श्री राम की सौमनस्यता। स्वयं किसी पद को प्राप्त करने से पहले वह अपने मित्र को सम्मान देना चाहते हैं। जो पिछड़े हैं, वंचित हैं, उनको भी अपने जैसा बनाना जानते हैं। पहले निषाद गुह को श्रंगेरपुर का राज्याभिषेक करवा कर निषादराज गुह नाम से अलंकृत किया, पश्चात राम अयोध्या के युवराज बने।

"ऐसे हैं मेरे राम" ।।

समाज का सेवाभाव ऐसा ही चाहिए।

परम सिध्द सन्त रामदास जी जब प्रार्थना करते थे तो कभी उनके होंठ नही हिलते थे!

शिष्यों ने पूछा - हम प्रार्थना करते हैं, तो होंठ हिलते हैं। आपके होंठ नहीं हिलते ? आप मूर्ति की तरह खड़े हो जाते हैं। आप कहते क्या है अन्दर से ? क्योंकि अगर आप अन्दर से भी कुछ कहेंगे, तो होंठो पर थोड़ा कंपन आ ही जाता है। चहेरे पर बोलने का भाव आ जाता है।लेकिन वह भाव भी नहीं आता!

सन्त रामदास जी ने कहा - मैं एक बार राजधानी से गुजरा और राजमहल के सामने द्वार पर मैंने सम्राट को खड़े देखा, और एक भिखारी को भी खड़े देखा !वह भिखारी बस खड़ा था। फटे--चीथड़े थे शरीर पर। जीर्ण - जर्जर देह थी, जैसे बहुत दिनो से भोजन न मिला हो !शरीर सूख कर कांटा हो गया। बस आंखें ही दीयों की तरह जगमगा रही थी। बाकी जीवन जैसे सब तरफ से विलीन हो गया हो !वह कैसे खड़ा था यह भी आश्चर्य था। लगता था अब गिरा -तब गिरा!

सम्राट उससे बोला - बोलो क्या चाहते हो ?

उस भिखारी ने कहा - अगर मेरे आपके द्वार पर खड़े होने से, मेरी मांग का पता नहीं चलता, तो कहने की कोई जरूरत नहीं !क्या कहना है और ? मै द्वार पर खड़ा हूं, मुझे देख लो। मेरा होना ही मेरी प्रार्थना है।

"सन्त रामदास जी ने कहा -उसी दिन से मैंने प्रार्थना बंद कर दी। मैं परमात्मा के द्वार पर खड़ा हूं। वह देख लेगें । मैं क्या कहूं ?

अगर मेरी स्थिति कुछ नहीं कह सकती, तो मेरे शब्द क्या कह सकेंगे ?

अगर वह मेरी स्थिति नहीं समझ सकते, तो मेरे शब्दों को क्या समझेंगे?

अतः भाव व द्दढ विश्वास ही सच्ची भक्ति के लक्षण है,यहाँ कुछ मांगना शेष नही रहता! आपका प्रार्थना में होना ही पर्याप्त है।

ठीक ऐसे ही अपने समाज के प्रति भक्तिभाव ऐसा चाहिए कि समाज के वंचित वर्ग की दयनीय स्थिति प्रत्यक्ष देखकर मन उद्वेलित होकर स्वतः सेवा के लिए हाथ आगे बढ़ें। वंचित वर्ग मांगेगा नहीं, उसकी स्थिति देखकर ही सम्पन्न वर्ग को समझना होगा और सेवा के लिए पहल करनी होगी। सेवाभाव ऐसा ही चाहिए। ■

प्रान्त: जम्मू

सेवा भारती, जम्मू कश्मीर में गंदोह भलेसा में **"बालिका छात्रावास"** के निर्माण के हेतु जम्मू एंड कश्मीर बैंक के सीएसआर के तहत अपना सहयोग प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि श्री मनोज सिन्हा जी उपराज्यपाल (ज.और क.) द्वारा सेवा भारती, अध्यक्ष श्री अनिल मन्हास जी को चेक प्रदान किया।

प्रान्त: पंजाब

सेवा भारती, नाभा में दिनांक 28 जनवरी को वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में बहन राजरानी जी, श्री सोमनाथ जी एवं श्री संजीव जी मुख्य अतिथि के रूप पे उपस्थित रहें। केंद्र के बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रदर्शित किया गया।

प्रान्त: जम्मू

सेवा भारती छात्रावास, कलगुनी मंदिर, गोवारी में श्री जय देव (दादा जी) एवं श्री सुधीर जी, अखिल भारतीय संगठन मंत्री राष्ट्रीय सेवा भारती की अध्यक्षता में सेवा भारती के पदाधिकारियों के साथ एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का एजेंडा सेवा भारती के सेवा कार्यों को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना और उन्हें लाभ पहुंचाना है। सेवा भारती के आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा पर चर्चा की गई।

प्रान्त: मालवा

MY एवं MTH हॉस्पिटल इंदौर में इंदौर व उसके आस पास ही नहीं अपितु दूरस्थ क्षेत्रों से भी आने वाले रोगियों की संख्या बड़ी मात्रा में रहती है। अस्पताल में आनेवाले रोगियों एवं उनके परिजनों के लिए एक विश्रामालय की आवश्यकता का अनुभव बहुत समय से किया जा रहा था। इस विषय को ध्यान में रखते हुए सेवा भारती संरक्षक मंडल के सदस्य विक्रम जी देसाई, जय जी काकवानी, पी डी अग्रवाल जी, अजय जी शिवानी एवं उनके सहयोगी सदस्यों ने इस कार्य को पूरा करने का निर्णय लिया। इस हेतु दिनाँक 30 जनवरी को MY हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉक्टर पी एस ठाकुर व क्षेत्रीय विधायक गोलू शुक्ला जी की उपस्थिति में भूमि पूजन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में रूपेश जी पाल (विभाग कार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ), मुकेश जी हजेला (सेवा भारती अध्यक्ष) व अन्य पदाधिकारी गण उपस्थित थे।

प्रान्त: मध्य भारत

सेवा भारती, मध्यभारत ग्राम धुरपन तह. इटारसी जिला नर्मदापुरम स्थित सेवा भारती के आशा महेंद्र शुक्ला जनजाति कन्या छात्रावास में वार्षिक उत्सव एवं दानदाता सम्मान समारोह संपन्न हुआ । जिसमे मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह क्षेत्र सेवा प्रमुख श्री ओमप्रकाश जी सिसोदिया एवं मुख्य अतिथि जिले की कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना जी उपस्थित रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ श्रीमति शीतल दयाल इटारसी ने की , विशेष अतिथि के रूप में भगवानदास जी अग्रवाल पिपरिया , साथ ही क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों के साथ साथ छात्रावास की बेटियों के पालक भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

प्रान्त: ब्रज

सेवा भारती ब्रज प्रदेश का दो दिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग दिनांक 2 दिसंबर एवं 3 दिसंबर 2023 को केशव सेवा धाम हरिगढ़ में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में आदरणीय क्षेत्र प्रचारक महेंद्र जी, क्षेत्र सेवा प्रमुख धनीराम जी, प्रांत सेवा प्रमुख मनीराम जी, प्रांत अध्यक्ष उमेश गर्ग जी, प्रांत मंत्री सूर्यनारायण जी, पूर्व प्रांत अध्यक्ष श्याम जी, विभाग प्रचारक गोविंद जी, मात्र मंडल की अधिकारी गीता बहन जी, निर्मल बहन जी, रश्मि बहन जी के अलावा संगठन मंत्री सुनील जी भी उपस्थित रहे । 2 दिन तक चले इस कार्यक्रम में शिक्षा स्वास्थ्य स्वावलंबन सामाजिक एवं कार्यालय संचालन व्यवस्था प्रबंधन आपदा प्रबंधन बाल संस्कार केंद्र का संचालन केंद्र का संचालन करने का प्रशिक्षण लगभग 300 कार्यकर्ताओं ने प्राप्त किया।

प्रान्त प्रशिक्षण वर्ग

सेवा भारती ,मध्य भारत का स्वावलंबन आयाम का प्रशिक्षण संपन्न हुआ। स्वावलंबन आयाम ही एक ऐसा आयाम है जो परिवार को संपन्नता और स्वाभिमान से जीना सिखाता है। इसी उद्देश्य को लेकर सेवा भारती ने मध्यभारत प्रांत का स्वावलंबन आयाम प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया,वर्ग के प्रारंभ में श्री लोकेश जी जो स्कूल बैग बनाने का व्यवसाय करते हैं। उन्होंने बताया कि हमने अपना व्यवसाय रुपए 10000 से प्रारंभ किया और आज लगभग 16 करोड रुपए तक का टर्नओवर है। प्रथम सत्र को संबोधित श्री विजय पौराणिक जी, राष्ट्रीय सेवा भारती के संयुक्त महामंत्री जी ने किया| उन्होंने स्वावलंबन के अंतर्गत वैभव श्री को समझाते हुए यह बताया कि आज जो हमसे सेवा प्राप्त कर रहा है वह आगे का दानदाता कैसे बने। देश और समाज को कुछ देने की भूमिका में कैसे आए इस पर बल दिया जाना जरूरी है। नहीं तो आजीवन सहायता लेने की प्रवृत्ति हमको गलत दिशा में ले जाती है। दूसरे सत्र में श्री कैलाश कुशवाहा ने पीपीटी के माध्यम से वैभव श्री और स्वयं सहायता समूह का अंतर समझाए तीसरे सत्र में नगर निगम से श्री आशीष मिश्रा ने स्वयं सहायता समूह के शासकीय योजनाओं के लाभ के बारे में बताया।

प्रान्त: कर्नाटक दक्षिण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा बेंगलुरु में संचालित **"स्नेह सेवा ट्रस्ट"** नामक निशुल्क ट्यूशन सेंटर ने 8वीं कक्षा के बच्चों को स्कॉलरशिप देने के लिए एलिजिबिलिटी टेस्ट करवाया। इस परीक्षा में 650 छात्र प्रतिभागी बने और जिसमें से निर्धारित आंकड़ों को सफलतापूर्वक पास करने वाले 250 बच्चों को लगभग 10,000 रुपए प्रतिवर्ष स्कॉलरशिप दी जाएगी।

प्रान्त: काशी

सेवा भारती सरस्वती शिशु मंदिर, धामपुर,काशी प्रान्त का एक दिवसीय सेवा केंद्र शिक्षक, शिक्षिका एवं सेवा विभाग के कार्यकर्ताओ का प्रशिक्षण वर्ग जिला अध्यक्ष श्रीमान मलखान सिंह जी की अध्यक्षता एवं जिला मंत्री नवनीत अग्रवाल के सानिध्य में सम्पन्न हूआ।प्रशिक्षण वर्ग में श्रीमान अनिल जी एवं श्रीमान जयकृष्ण जी ने दीप प्रज्वलित कर वर्ग का शुभारंभ किया| संस्कार केंद्रिर सञ्चालन विधि का एवं सेवा केंद्र व्यवस्थित और निरंतर चले इसका प्रशिक्षण दिया दिया गया। वर्ग के समापन पर सभी सेवा केन्द्रो के शिक्षक और शिक्षिकाओं को भारत माता के चित्र भेंट किये गये।

प्रान्त: पंजाब

श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या में राम मंदिर के बनने व रामलला की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा होने की खुशी में रविवार सुबह शहीदी पार्क में सेवा भारती ने रामोत्सव समागम का आयोजन किया। समारोह में मुख्यातिथि समाजसेवी नवीन सिंगला और समाजसेवी देवप्रिय त्यागी ने सेवा भारती द्वारा आयोजित बच्चों की बाल मैराथन को झंडी देकर रवाना किया। इस बाल मैराथन में डीएन मॉडल स्कूल, देव समाज स्कूल,आरकेएस पब्लिक स्कूल, आर्य मॉडल स्कूल, कैंब्रिज स्कूल सहित सरकारी स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया। यह हाफ मैराथन शहीदी पार्क से शुरू होकर जवाहर नगर, गीता भवन चौक, बगियाना बस्ती, गिल पैलेस रॉड से डीएम कॉलेज रोड होते हुए शहीदी पार्क में पहुंची। इसके अलावा बच्चों में चित्रकला, भाषण लेखन, नाटक, दीप साझा, भजन गायन आदि प्रतियोगिताएं भी करवाई गई। डॉ. मुकेश कोचर ने बताया कि यह प्रतियोगिताएं भगवान श्रीराम जी के जीवन से संबंधित थी ताकि युवापीढ़ी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम जी के आदर्शमय जीवन को जान सके।

प्रान्त: काशी

सेवा भारती जिला धामपुर के नेहटौर खंड के ग्राम गिंदोरी में श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में किशोरी विकास केंद्र पर श्रीमान जगदीश जी केंद्रीय अधिकारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा श्री सुंदरकांड पाठ का शुभारंभ एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

सेवा से संवरता जीवन

सारा एक्सपोर्ट प्रशिक्षण केन्द्र, सेवा भारती, इंदप्रस्थ

■ **इन्दिरा राय**

चिलचिलाती धूप में सेवा बस्ती में किसी आवश्यक काम से जाना हुआ अभी मैं रास्ते में ही थी कि एक स्कूटी आकर मेरे पास रूकी । मैंने आश्चर्य से देखा एक 32-35 वर्ष की महिला करीने से साड़ी का पल्लू ओढ़े हुये स्कूटी से उतर कर मुझे प्रणाम करने लगी आशीर्वाद देने के बाद जब मैंने उसे ध्यान से देखा, वह बोली..., दीदी मैं कविता हूं यही पास की बस्ती में रहती हूं । सेवा भारती ने तो मेरी जिन्दगी ही बदल दी है । मेरे मन में बहुत से प्रश्न उठ रहे थे मैंने पूछा जरा विस्तार से बताओ जीवन में क्या परिवर्तन आया है? कैसे आया है? उसने कहा चलिये केन्द्र पर चलते है वहीं बैठ कर मैं आपको पूरी बात बताती हूं । हम केन्द्र पर पहुंचे तो शिक्षिका ने बड़े प्रेम से हमारा स्वागत किया और ठंडा जल पिलाया । बात चीत का सिलसिला शुरू हुआ, कविता कहने लगी कभी-कभी छोटी-छोटी घटनायें जीवन में बड़ा परिवर्तन ले आती हैं ।

गर्मी की छुट्टियों में एक बड़े पब्लिक स्कूल में पढ़ने वाला बालक यहां आता था हमारे बच्चों को तरह-तरह के खेल सिखाता था । एक दिन उसकी माताजी भी उसके साथ यहां आई । यह देखने के लिये कि उनका पुत्र कहां जाता है क्या करता है? उस समय केन्द्र पर सिलाई की कक्षा चल रही थी। महिलाओं को सिलाई सीखते हुये देखा । उनके मन में विचार आया कि मैं इन महिलाओं को कुछ कपड़ा और धागे दे कर इनकी सहायता करूं । इस बात की चर्चा उन्होंने एक सामाजिक कार्यकर्ता नीधि आहुजा जी, दिल्ली प्रान्त उपाध्यक्ष सहेली से की और उनकी सलाह मांगी । सहेली ने कहा यदि आप इनके लिये कुछ करना चाहती हो तो कुछ ऐसा करो कि इनके जीवन में सुखद बदलाव आ सके । इस बात पर वह मनन चिन्तन करने लगी । इस घटना की चर्चा उन्होंने एक दिन अपने भाई से की । दीदी यहां मैं बता दूं कि उनके भाई तुषार जी सिले-सिलाये वस्त्रों के निर्यातक हैं।

एक दिन दोनों भाई बहन सेवा बस्ती से गुजर कर सेवा केन्द्र पर गये वहां महिलाओं को सिलाई सीखते देख उनके मन में विचार आया, ये तो केवल घरेलू उपयोग के वस्त्र ही सिल सकती हैं। अगर इन्हें व्यवसायिक प्रशिक्षण दे कर फैक्टरी में लगाया जाये तो ये अपने लिये व्यवस्थित जीविका कमा पायेंगी । इस विचार को उन्होंने सेवा भारती के कार्यकर्ताओं से साझा किया और सलाह मांगी । तय हुआ कि इच्छुक महिलाओं को व्यवसायिक मशीनों पर सिलाई की टे॰निंग देकर फिर इन्हें फैक्टरी में नौकरी पर लगाया जाय ।

सेवा भावी तुषार जी ने दो व्यवसायिक सिलाई मशीनें सेवा भारती केन्द्र पर भिजवा दी। अब समस्या थी इन्हें सिखाये कौंन ? वहां की सिलाई शिक्षिका को इन मशिनों के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं। फैक्टरी से दो कारीगर सिखाने के लिये भेजे गये दस दिन में थोड़ा बहुत सीख कर महिलायें फैक्टरी से काम के लिये गई । यहां कविता कुछ क्षणों के लिये रुक गई। मेरी उत्सुकता बढ़ रही थी, हां बताओ फिर आगे क्या हुआ। उन्हें नौकरी मिली क्या? इस पर वह गहरी सांस लेकर

बोली..... मात्रा दस दिन की ट्रेनिंग होने से महिलायें कुछ भी ठीक से नहीं सीख पाई थी, सफल नहीं हो पाई ।

एक तरह से अव्यवस्था का वातावरण बन गया। यह प्रयास पूरी तरह से असफल रहा । किन्तु कार्यकर्ताओं ने हार नहीं मानी । नये सिरे से इस प्रकल्प पर पुनः विचार विमर्श हुआ। विस्तार से योजना बना कर इस प्रकल्प को शुरू किया गया । पहली बार की असफलता से लोगों के मन में थोड़ी झिझक थी । कुछ महिलायें साहस कर के सीखने के लिये आगे आई, उन में से मैं भी एक हूं । इस बार एक महिने की टे॰निंग अवधि तय की गई । हर सप्ताह के अन्त में टेस्ट लिया जाता था । जो महिलाये टेस्ट में सफल होती उन्हें अगले सप्ताह का कोर्स सिखाया जाता था। जो महिलाये सफल नहीं हो पाती उनको पिछले सप्ताह का कोर्स ही दोहराने के लिये

दिया जाता । इस बार दो की जगह चार मशीनों पर प्रशिक्षण दिया जा रहा था । इस तरह एक बैच में आठ महिलायें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थी ।

फैक्टरी से एक बहुत ही कुशल व अनुभवी व्यक्ति को प्रशिक्षण देने के लिये भेजा गया था चार महिलायें मशीन पर काम सीखती और चार हाथ का काम । इस प्रकार बारी बारी आठों महिलायें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थी। प्रशिक्षण लेने के लिये 18 से 45 वर्ष की उम्र निश्चित की गई। महिलाओं के अलावा पुरूष भी इस प्रशिक्षण के लिये आगे आ रहे हैं । अब तक लगभग 80 महिलायें तथा 4 पुरूष नौकरी प्राप्त कर सफलता पूर्वक अपनी जीविका कमा रहे हैं । चलिये मैं आपको कुछ लोगों से मिलवाती हूं जो प्रशिक्षण लेकर सफलता पूर्वक नौकरी कर रही हैं । इसके लिये आप को सेवा बस्ती में चलना होगा मैं तुरन्त तैयार हो गई । संकरी गलियों से होते हुये हम एक छोटे से कमरे के पास पहुंचे । द्वार खटखटाने पर एक 38 से 40 वर्ष की महिला बाहर आई। अन्दर आने का आग्रह करने लगी ।

उस छोटे से कमरे में एक तरफ रसोई बनाई गई थी और दूसरी ओर एक तख्त पड़ा था हम उसी पर बैठ कर बातें करने लगे। वह बोली.. मेरा नाम गीता है, मेरे पति रिक्शा चलाते हैं उससे कुछ खास आमदनी नहीं हो पाती है। तीन बच्चों का पालन -पोषण बहुत मुश्किल से हो पा रहा था । तभी मुझे पता चला सेवा भारती के केन्द्र पर नौकरी दिलाने का कोई प्रशिक्षण हो रहा है । मैं वहां गई पता चला एक महीने तक काम सीखना होगा तब नौकरी लगेगी, सोचा कोई बात नहीं एक महिना ही तो है । मैंने बड़े ध्यान से काम सीखा और सच में एक महिने बाद फैक्टरी में मुझे काम मिल गया। अब मैं अच्छे पैसे कमा रही हूं । आत्मनिर्भर हो कर मुझे बहुत खुशी होती है । आस पड़ोस के लोग अब मुझे आदर की दृष्टि से देखते हैं।

थोड़ी दूर चल कर हम एक और महिला के घर पहुंचे उन्होंने अपना नाम महेश्वरी बतलाया कुछ कहने से पहले ही उनकी आंखों में आंसू आ गये बोली दीदी मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया है। बच्चों को लेकर अपनी माँ के घर रहती हूं । बच्चों के लालन-पालन के लिये छोटे-मोटे काम करती थी । एक दिन मेरे भाई ने मुझे सेवा भारती में प्रशिक्षण की बात बताई । मैं केन्द्र पर गई और बड़े मनोयोग से प्रशिक्षण पूरा कर नौकरी प्राप्त

कर ली है। पहले घर परिवार में रोज-रोज कलेश होते रहते थे । आस-पास के लोग अब मुझे सम्मान की दृष्टि से देखते हैं । मैं बहुत खुश हूं आत्मनिर्भर जो हो गई हूं।

वहां से निकलने के बाद कविता बोली दीदी मेरी भी तो बात सुन लो। मैंने कहा हां हां बताओ...। वह बोली... मेरे जीवन में सब कुछ अच्छा तो नही कहूंगी ठीक चल रहा था तभी एक दिन मेरे पति दुर्घटना ग्रस्त हो गये और सब कुछ जैसे ठप्प हो गया लोगों के घरों में चौका- बर्तन करके गृहस्थी की गाड़ी कठिनता से चला पा रही थी । एक दिन मेरी बेटी जो कि सेवा भारती के केन्द्र पर किशोरी विकास की कक्षा में जाती थी, बताया वहां कोई नौकरी देने का प्रशिक्षण कार्य चल रहा है । मैंने केन्द्र पहुंच कर सारी जानकारी ली प्रशिक्षण प्राप्त किया और नौकरी पर लग गई । अच्छे पैसे कमा रही हूं । घर खर्च के बाद थोड़े पैसे बचा कर यह स्कूटी मैंने अपने पैसों से खरीदी हैं ताकि काम पर आने-जाने की सुविध हो और समय भी बच सके । इतना कह कर उसकी आंखों में जो आत्मविश्वास की चमक थी वह देख कर ही अनुभव की जा सकती है । कहानी यहीं पूरी नहीं होती है........

कविता से विदा लेकर फिर एक बार केन्द्र की ओर अपने कदम बढ़ाये वहां पहुंचकर मैंने प्रत्यक्ष महिलाओं को प्रशिक्षण लेते हुये देखा। उनको प्रशिक्षण देने वाले गजराज सिंह जी से मुलाकात हुई । उन्होंने बताया प्रशिक्षण देने में थोड़ी कठिनाई तो होती ही है । परन्तु ज्यादा कठिनाई तब होती है जब महिलायें पढ़ी लिखी नहीं होती है उन्हें नौकरी की भी सख्त जरूरत होती है । ऐसी महिलाओं को केन्द्र पर ही थोड़ा अक्षर ज्ञान और गिनती सिखा कर बाद में सिलाइ में शिक्षित करते हैं। वहीं एक लड़के से भी मिलने का अवसर मिला जो प्रशिक्षण लेकर नौकरी पर लगा था।

वह बोला, मेरा नाम विवेक कुमार हैख् मैं 12वीं पास हूं । पिता जी सिलाई का काम करते थे परन्तु कोरोना होने से अचानक उनकी मृत्यु हो गई। मैं परिवार में सबसे बड़ा हूं, पूरे परिवार का भार अब मुझ पर ही है। माता जी बीमार रहती है कहीं कुछ काम नहीं मिल पा रहा था तभी मेरे एक दोस्त ने बताया सेवा भारती के केन्द्र पर प्रशिक्षण के बाद वो नौकरी भी दिलवा देते हैं । मैं झिझक रहा था क्योंकि वहां तो सिर्फ महिलायें ही सीखने जाती हैं । एक दिन साहस कर के मैं केन्द्र पर गया और अपनी इच्छा जताई । प्रशिक्षण देने वाले सर ने मेरी पूरी बात सुन कर मुझे प्रशिक्षण और नौकरी दिलाने का आश्वासन दिया। प्रशिक्षण लेकर मैं नौकरी पर लग गया हूं । अच्छे पैसे मिल रहे हैं।

अब मुझे इस प्रकल्प के असली सूत्रधार **''सारा एक्सपोर्ट''** के मालिक तुषार जी से मिलने की इच्छा हुई। समय ले कर मैं उनके कार्यालय पहुंची प्रारम्भिक परिचय के बाद उन्होंने कहा **''समाज के लिए कुछ करना यह मेरा दायित्व है। सेवा पुण्य के लिए नहीं पुण्य से मिलती है। मैं सेवा भारती और ईश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मुझे यह सेवा करने का अवसर मिला हैं। ये मेरा परम सौभाग्य है कि मैं कुछ लोगों को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग कर पा रहा हूं।''**

भारतीय संस्कृति में सेवा को सर्वोत्तम माना गया है । मैंने अपने सामने बड़े ही विनम्र और सरल व्यक्ति को पाया । इतनी बड़ी फैक्टरी का मालिक होने का अभिमान कहीं भी नहीं झलक रहा था। धन्यवाद कहते हुये मैंने उनसे विदा ली । मन में यह सोचते हुये कि अभी तो ऐसे अनेकों प्रशिक्षण केन्द्रों की आवश्यकता है जो कि समाज के हर स्तर के लोगों को रोजगार उपलब्ध करा सकें। अभावग्रस्त समाज के लिये ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र वरदान से कम नहीं हैं।

संपर्क सूत्र : कवल देव प्रशाद यादव
: 9911144579

प्रान्तों में सेवा भारती द्वारा श्री रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में किये गए कार्यक्रमों की कुछ झलकियाँ

प्रान्त: ब्रज

प्रान्त: हिमांचल

अद्भुत योगासन - बालिका छात्रावास,सेवाभारती उज्जैन

प्रान्त: अवध अयोध्या में संतो का स्वागत करते हुए

प्रान्त: मेरठ केंद्र वार्षिक उत्सव

आगामी प्रशिक्षण वर्ग

स्व. सूर्यनारायण राव सेवा कार्यकर्ता विकास योजना
29 फरवरी से 3 मार्च 2024
भोपाल (मध्य प्रदेश)

कार्यालय पता:
राष्ट्रीय सेवा भारती
BD-37, गली न.14, फैज़ रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली -110005

वेबसाइट :www.rashtriyasewabharati.org
ईमेल : rashtriyasewa@gmail.com
फोन न. : 011-46523618,
मोबाइल न. 09868245005